

डॉ. जॉर्ज पेटन, बाइबल अनुवाद, सत्र 1, बाइबल अनुवाद का परिचय, भाग 1

© 2024 जॉर्ज पेटन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉर्ज पेटन हैं जो बाइबल अनुवाद पर अपनी श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह सत्र संख्या एक है, बाइबल अनुवाद का परिचय, भाग 1।

नमस्ते, मेरा नाम जॉर्ज पेटन है। मैं यहाँ डलास इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में प्रशिक्षक हूँ। मेरी पत्नी और मैं 40 से अधिक वर्षों से विक्लिफ़ बाइबल ट्रांसलेटर के साथ काम कर रहे हैं। मैं आपको थोड़ा बता दूँ कि मैं बाइबल अनुवाद में कैसे आया।

मैं बायोला विश्वविद्यालय में एक छात्र था और मैं सोच रहा था, प्रभु, मैं अपने जीवन के साथ क्या करूँ? आपने मुझे जो उपहार दिए हैं, उनका मैं क्या करूँ? मुझे मिशन में रुचि थी, मुझे पूर्ण-कालिक सेवकाई में रहने में रुचि थी, और मैंने सोचा, आपने मुझे जो उपहार दिए हैं, उनके साथ मैं आपकी सेवा कैसे कर सकता हूँ? फिर मैंने अपना प्रमुख विषय बदलकर क्रॉस-कल्चरल मिनिस्ट्रीज कर लिया, और मैंने पाया कि मैं वास्तव में उस क्षेत्र में हूँ क्योंकि यह विदेशों में काम करने, क्रॉस-कल्चरल रूप से काम करने और साथ ही सेवकाई में भी समन्वय करता है। और फिर मैंने सोचा, ठीक है, क्रॉस-कल्चरल मिनिस्ट्रीज के बारे में मुझे सबसे अच्छा क्या लगता है? कई तरीकों से, भगवान ने मुझे बाइबल अनुवाद की ओर अग्रसर किया। मैं बाइबल अनुवाद के बारे में भावुक था, और मैं वास्तव में बायोला में अपनी डिग्री पूरी करने के बाद बाइबल अनुवाद बनने के लिए उत्सुक था।

रास्ते में, मेरी मुलाकात वेंडी नाम की एक प्यारी लड़की से हुई, और उसने पूछा, तुम किस विषय में पढ़ाई कर रही हो? तुम वहाँ क्या काम कर रही हो? और मैंने कहा कि मैं बाइबल अनुवाद बनने की तैयारी कर रहा हूँ। और उसने कहा, मैं भी। मैंने कहा, माफ़ करें, क्या? फिर से आना? बहुत सी लड़कियाँ ऐसा नहीं कहतीं।

और इसलिए, उसने मुझे बताया कि कैसे भगवान ने उसे उसके परिवार के माध्यम से मार्गदर्शन किया, एक ऐसे परिवार में बड़ा हुआ जो मिशन और मिशनरियों का समर्थन करता था। वह बचपन में कई विक्लिफ़ मिशनरियों से मिली थी। जब वह दस साल की थी, तो उसने अपनी माँ से कहा, मैं उन लोगों की तरह एक बाइबल अनुवादक बनना चाहती हूँ।

10 साल बाद, हम बायोला में मिले, और परमेश्वर ने हमें सेवकाई में सेवा करने की उस आम इच्छा, विदेशों में सेवा करने की उस आम इच्छा, और बाइबल अनुवाद में शामिल होने की उस आम इच्छा के साथ एक साथ लाया। और यहीं से हमारी शुरुआत हुई। फिर हम विदेश गए और केन्या में कई सालों तक स्थानीय भाषाओं में से एक में काम किया, उस भाषा में बाइबल अनुवाद किया।

वहाँ से, हम उस परियोजना को पूरा नहीं कर पाए क्योंकि हम परामर्श में चले गए, और मैं बाइबल अनुवाद करने वाले अन्य लोगों के लिए अनुवाद सलाहकार बन गया। फिर, हम और अधिक अनुवाद परामर्श करने के लिए तंजानिया चले गए। उस समय, मैंने उस परियोजना का काम अपने एक सहकर्मी को सौंप दिया।

और इसलिए, हम इन सभी वर्षों से बाइबल अनुवाद में शामिल रहे हैं। सलाहकार के रूप में मैंने जो काम किया, उसका एक हिस्सा अन्य लोगों को प्रशिक्षित करना था। इसलिए, हम केन्याई और तंजानियाई लोगों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएँ चलाते थे।

हम SAL सहकर्मियों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएँ चलाते थे। मैं अनुवाद सलाहकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं में भी शामिल था। और इसलिए हम 2010 में घर आ गए, और भगवान ने हमें 2010 में घर पर रहने के लिए पुनर्निर्देशित किया।

फिर मैंने 2010 में बायोला यूनिवर्सिटी में वर्क क्लिफ ट्रेनिंग प्रोग्राम में पढ़ाना शुरू किया। और इसलिए, मैं भाषाविज्ञान पढ़ा रहा था। मैं बाइबल अनुवाद पढ़ा रहा था, बाइबल अनुवादकों की अगली पीढ़ी को तैयार कर रहा था ताकि वे बाहर जाकर वही काम करें जो हमने इतने सालों तक किया था।

मैंने वहाँ करीब 10 साल तक पढ़ाया। जब कोविड आया, तो वह कार्यक्रम खत्म होने वाला था, इसलिए मैंने डलास, टेक्सास में डलास इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लिया।

और यह हमारा मुख्य भाषाई केंद्र है। हमारा मुख्य प्रशिक्षण केंद्र विक्लिफ, एसआईएल, समर इंस्टीट्यूट ऑफ लिंग्विस्टिक्स और अन्य संगठनों के लिए भी है। वे अपने लोगों को बाइबल अनुवाद में प्रशिक्षित होने के लिए यहाँ भेजते हैं।

और इसलिए, मैं 2020 से यहाँ हूँ। मैं यहाँ बाइबल अनुवाद पाठ्यक्रम पढ़ाता हूँ। इस दौरान, मैंने गॉर्डन कॉनवेल सेमिनरी में बाइबल अनुवाद में डॉक्टर ऑफ मिनिस्ट्री की डिग्री प्राप्त की।

बाद में, मैंने स्टेलनबोश विश्वविद्यालय में प्राचीन भाषाओं में पीएचडी की। वे सभी व्यावसायिक विकास की डिग्री थीं, इसलिए मैं अपने अनुवाद, शिक्षण और परामर्श कौशल में सुधार कर सकता था। तो, मेरे पास वह पृष्ठभूमि है।

और इसलिए, इस श्रृंखला में आप जो सुन रहे हैं वह उन सभी चीजों का परिणाम है जो हमने इन सभी वर्षों में अनुभव की हैं। अगली बात जो मैं बताना चाहूँगा वह यह है कि यह कार्यक्रम किस बारे में है। और इसलिए यह श्रृंखला जो हम कर रहे हैं वह पूरी तरह से बाइबल अनुवाद के बारे में है।

यह अनुवाद है, लेकिन विशेष रूप से बाइबल अनुवाद। और इसलिए, हम जो पहली बात करने जा रहे हैं वह है बाइबल अनुवाद क्या है? अनुवाद क्या है? और अनुवाद की प्रक्रिया की मूल बातें। दूसरी बात, हम भाषा के बारे में बात करने जा रहे हैं।

हम संचार और अर्थ के बारे में बात करने जा रहे हैं और आप एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ का संचार कैसे करते हैं। और यही अनुवाद की प्रक्रिया है। दूसरी बात, अनुवाद ही संचार है।

अनुवाद मानव संचार का एक उपसमूह है। यह मानव संचार का एक विशेष प्रकार है। और इसलिए, हम संचार के रूप में अनुवाद के बारे में बात करने जा रहे हैं।

लेकिन हम यह इस समझ के आधार पर करते हैं कि लोग कैसे संवाद करते हैं। हम एक भाषा में एक अलग भाषा से आए पाठ को संप्रेषित करने की प्रक्रिया की समझ से ऐसा करते हैं। हम अनुवाद के इतिहास, बाइबल अनुवाद के इतिहास, अनुवाद के तरीकों और उसमें शामिल कुछ सिद्धांतों के बारे में थोड़ी बात करेंगे।

हम स्थानांतरण चुनौतियों के बारे में बात करने जा रहे हैं। किसी दिए गए पाठ को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना क्यों मुश्किल है? इनमें से कुछ चुनौतियाँ भाषा की चुनौतियाँ हैं जहाँ आपको बस यह कहना होता है कि हमारी भाषा इसे उस तरह से नहीं कह सकती। बाइबल के पाठ से कई चुनौतियाँ आती हैं जिनका अन्य भाषाओं में अनुवाद करना मुश्किल होता है।

और हम उन पर चर्चा करेंगे। दूसरी बात, सांस्कृतिक अंतर हैं। और उन सांस्कृतिक अंतरों के कारण इस दूसरी भाषा में आपके पाठ को समझना मुश्किल हो जाता है क्योंकि उनके पास मूल पाठ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक समझ, सांस्कृतिक विश्वदृष्टि नहीं है, जो उन लोगों के पास है जो 2024 में दुनिया में कहीं रहते हैं और बाइबिल की संस्कृति, बाइबिल के समय और उन भाषाओं से 2,000 साल से अधिक दूर हैं।

और इसलिए ये दो क्षेत्र, भाषा संबंधी चुनौतियाँ और संस्कृति संबंधी चुनौतियाँ, वे हैं जिन पर हम ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं। फिर हम उन चुनौतियों से निपटने के तरीकों पर विचार करेंगे। ठीक है, तो सबसे पहले, मैं इस बारे में बात करना चाहूँगा कि अनुवाद क्या है और यह कैसा दिखता है? आप आज जो कुछ भी बना रहे हैं, चाहे सूप का डिब्बा हो, तेल का कंटेनर हो या इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के लिए निर्देशों का प्रिंटआउट हो, आप उसे बिना देखे नहीं उठा सकते कि यह कितनी भाषाओं में है।

अनुवाद हर जगह है, और यह 1980 के दशक में जब मैंने अनुवाद का काम शुरू किया था, तब की तुलना में कहीं ज़्यादा व्यापक है। हमारे पास यह नहीं था।

हमारे पास सूप का डिब्बा नहीं था जिस पर पाँच अलग-अलग भाषाएँ लिखी हों या कुछ और। लेकिन अब यह हर जगह है। यह एक संस्कृति और दूसरी संस्कृति के बीच सेतु का काम करता है, लेकिन यह फैलने और अपने वित्तीय प्रभाव को बढ़ाने का एक तरीका भी है।

लेकिन, मैं वॉलमार्ट भी गया और वॉलमार्ट पर एक मॉनिटर था जो लोगों को फार्मसी से निपटने के तरीके के बारे में निर्देश दे रहा था। तो, यह एक स्क्रीन थी जो फार्मसी के ठीक बगल में थी। अब मैंने देखा कि यह दो, तीन, चार अलग-अलग भाषाओं में स्कॉल कर रहा था, और फिर यह फिर से शीर्ष पर शुरू हो जाता था।

यह नीचे स्कॉल करेगा। इसलिए, जहाँ भी हम जाते हैं, सब कुछ अब कई भाषाओं में लिखा जाता है। और यही अनुवाद है।

फिर हम संवाद कैसे करते हैं? तो, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, खुद सोचिए, आप अनुवाद को कैसे परिभाषित करेंगे? अनुवाद क्या है? मैं आपको एक मिनट के लिए बता दूँ कि अनुवाद क्या है। मैं इस उदाहरण का उपयोग करूँगा। अनुवाद: मूल रूप से, हम लिखित अनुवाद के बारे में बात कर रहे हैं।

लिखित अनुवाद में किसी पहली भाषा से प्राप्त पाठ को दूसरी भाषा में लिखा जाता है। अनुवाद का दूसरा प्रकार है मौखिक अनुवाद।

तो आपके पास भाषा A से एक व्यक्ति और भाषा B से एक व्यक्ति है, और बीच में जो व्यक्ति है, यहाँ वह है जो पहले व्यक्ति ने कहा और उसे दूसरे व्यक्ति को बताता है। अगर आप चाहें तो इसे मौखिक अनुवाद कहते हैं। इसे व्याख्या कहते हैं।

तो लिखित अनुवाद और बिना व्याख्या के अनुवाद में क्या अंतर है? और मैं समझने के लिए व्याख्या की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं संदेश को संप्रेषित करने की बात कर रहा हूँ। तो, जाहिर है, दोनों में, आप पहली भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ स्थानांतरित कर रहे हैं।

दूसरी बात यह है कि दोनों ही पहले पाठ से संदेश का अर्थ दूसरी भाषा में संप्रेषित करने का प्रयास कर रहे हैं। चाहे वह मौखिक कथन हो या लिखित पाठ, हम अर्थ को दूसरे पक्ष तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। मैंने वास्तव में मौखिक अनुवाद किया है।

मैंने दुभाषिया का काम किया है। मैंने अमेरिका में स्वाहिली में अनुवादक या दुभाषिया के रूप में काम किया है। और इसलिए मैं लोगों के साथ काम करता हूँ, कभी-कभी यह डॉक्टर के दफ़्तर में होता है, कभी वकील के दफ़्तर में, कभी किसी और के साथ, जिसका क्लाइंट अंग्रेज़ी तो बोलता है लेकिन इतनी अच्छी तरह से नहीं जानता कि वह उस विशेष क्षेत्र में क्या बात कर रहा है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं।

तो मैं वहाँ हूँ, और मैं वह व्यक्ति हूँ जो डॉक्टर और क्लाइंट के बीच मध्यस्थ हूँ। और इसलिए मेरा लक्ष्य यह है कि डॉक्टर जो कहता है उसे स्वाहिली बोलने वाले व्यक्ति को बताऊँ और इसके विपरीत। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं बीच में होता हूँ, और मैं उसी प्रथम व्यक्ति में बोलता हूँ जो वक्ता बोलता है।

इसलिए, अगर डॉक्टर कहता है, मैं चाहता हूँ कि आप एक्स-रे करवाएँ, तो मैं स्वाहिली में कहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि आप एक्स-रे करवाएँ। और फिर मरीज़ पूछ सकता है, मैं कहाँ जाऊँ? और फिर मैं कहता हूँ, मैं कहाँ जाऊँ? ध्यान दें कि मैंने यह नहीं कहा, वह कहाँ जाए? या, क्या वह मुझे बता सकता है कि मुझे कहाँ जाना चाहिए? नहीं, मैं उस बीच की चीज़ होने की आवाज़ हूँ। यही लिखित पाठ है।

लिखित पाठ वह आवाज़ है जो पहले पाठ में अर्थ और उससे जुड़ी हर चीज़ को दूसरे पाठ में ले जाती है। अब, उनके बीच कुछ अंतर हैं। जाहिर है, एक लिखा हुआ है, दूसरा बोला हुआ है।

ठीक है, हम यह जानते हैं। लेकिन और क्या? तो, अनुवाद लिखा जा रहा है, और जब हम कहते हैं कि यह लिखा गया है, तो यह कुछ समय तक बना रहता है। आपके पास एक लिखित पाठ है जो वहाँ है।

लेकिन जब आप कुछ कहते हैं, जैसे कि यह भाषण जो मैं दे रहा हूँ, यह भाषण जो मैं दे रहा हूँ, अगर यह रिकॉर्ड नहीं किया गया है, तो जैसे ही मैं इसे कहता हूँ, यह चला जाता है। और आप इसे वापस नहीं पा सकते। रिकॉर्डिंग होना वास्तव में बहुत मददगार है।

अब, मैंने ज़ूम पर प्रतिनियुक्ति की है, जहाँ एक महिला स्वाहिली बोलने वाली थी। वह यहाँ डलास में एक कार दुर्घटना में घायल हो गई। विपक्ष के वकील, जिस व्यक्ति का यह वकील बचाव कर रहा था, वह स्वाहिली बोलने वाली महिला से सवाल पूछ रहा था।

और फिर उसका वकील भी वहाँ था। और इसलिए, मैं तब मध्यस्थ था। और यह रिकॉर्ड किया गया।

और यह क्यों रिकॉर्ड किया गया? क्योंकि यह तब अदालती सबूत था। इसलिए, यह बहुत गंभीर था। इसलिए, मुझे यह सुनिश्चित करना था कि मैं इसे सही तरीके से दर्ज करूँ।

और समस्या का एक हिस्सा यह था कि यह महिला कह रही थी, अच्छा, इस व्यक्ति ने मुझे इस तरह मारा। और इसलिए, स्वाहिली में, आप कहेंगे, अलीपिगा, उसने मुझे मारा। तो, यह आह पुरुष के लिए हो सकता है, या यह एक महिला के लिए हो सकता है।

तो, मैं क्या कहूँ? मुझे नहीं पता, क्योंकि उसने कहा, अलीपिगा। मुझे नहीं पता कि वह आदमी है या औरत, इसलिए मुझे लगता है। और मैंने कहा, उसने मुझे मारा।

बचाव पक्ष के वकील, एक मिनट रुको। तुम क्यों कह रहे हो कि वह? मेरे नोट्स में यहाँ लिखा है कि वह एक महिला थी। क्या अब तुम अपनी कहानी बदल रहे हो? और मैं कह रहा हूँ, अरे नहीं, मैंने अभी गलती की है।

तो, अनुवाद के बारे में एक बात यह है कि आप बाद में वापस जाकर इसे सुधार सकते हैं। जब मैं ऐसी गलती करता हूँ तो मैं क्या करूँ? खैर, मैंने तुरंत कहा, ऑफ द रिकॉर्ड, मुझे आपको कुछ बताना है। और मैंने कहा कि भाषा ऐसी ही है।

मैंने मान लिया था कि यह कोई पुरुष होगा, लेकिन ऐसा नहीं था। इसलिए, अब से मैं 'वह' ही कहूँगा। लेकिन स्वाहिली भाषा अस्पष्ट है, और मुझे नहीं पता था।

तो, यह एक ऐसी चीज़ है जो मुझे करनी थी। तो, व्याख्या, जब तक कि इसे रिकॉर्ड न किया जाए, यह चली जाती है। और एक बार जब आप इसे कह देते हैं, तो आप वापस जाकर इसे ठीक नहीं कर सकते।

तो, मैं एक डॉक्टर के दफ़्तर में हूँ। मैं तब तक वापस नहीं जा सकता जब तक डॉक्टर न कहे, अरे, क्या आप इसे और स्पष्ट कर सकते हैं? मुझे सच में यकीन नहीं है कि वह समझ पाया कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ। तो, यह तथ्य कि यह वहाँ है, वह बोला हुआ रहता है, इसका मतलब है कि आप वापस जा सकते हैं और बाद में इसे संपादित और संशोधित कर सकते हैं।

आप अपना समय भी ले सकते हैं। आप जितनी बार चाहें वापस जा सकते हैं और इसे सही कर सकते हैं और ठीक कर सकते हैं, बस जब तक आप कर सकते हैं, फिर सुनिश्चित करें कि यह वह सब कुछ कहता है जो आप कहना चाहते हैं। आप इसे किसी और को दे सकते हैं।

वे इसे आपके लिए पढ़ सकते हैं। आप किसी पेशेवर संपादक से इसे पढ़वा सकते हैं। लेकिन लिखित अनुवाद में आपको यह सुविधा मिलती है, लेकिन मौखिक अनुवाद में नहीं।

और दूसरी बात यह है कि जब आप इस तरह की स्थिति में होते हैं, तो आपको अभी सोचना होता है। और कुछ मायनों में, आपको एक ही समय में दो भाषाओं में सोचना होता है, जो कठिन है। यही कारण है कि मैं कोर इंटरप्रिटिंग नहीं करूँगा क्योंकि यह बहुत तेज़ होता है, और मेरा दिमाग इतनी तेज़ी से काम नहीं कर सकता, खासकर जैसे-जैसे मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ।

तो, मैं अभी भी कुछ मौखिक अनुवाद करता हूँ। मैं अभी भी कुछ अनुवाद करता हूँ, स्वाहिली से अंग्रेजी, अंग्रेजी से स्वाहिली लिखित अनुवाद। और हम इस पर और चर्चा करेंगे।

लेकिन अनुवाद से हमारा मतलब अनुवाद के लिखित पहलू से है। ठीक है। तो, हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि अनुवाद क्या है, लेकिन फिर हम विशेष रूप से इस बात पर चर्चा करेंगे कि बाइबल अनुवाद क्या है और यह सामान्य अनुवाद से किस तरह अलग है।

ठीक है। जब आप अनुवाद के बारे में बात करते हैं, तो हम कह सकते हैं कि यह एक उत्पाद है। यहाँ एक्स भाषा में बाइबल का अनुवाद है।

तो, आप इस बारे में बात कर सकते हैं कि यह चीज़ अपने आप में अनुवाद है। और हम अपनी प्रक्रिया में इसके बारे में बात करेंगे। दूसरी बात, अनुवाद एक प्रक्रिया है।

इस लिखित पाठ को भाषा ए में लेने की प्रक्रिया, हमारे मामले में, बाइबिल, पुराना नियम या तो हिब्रू या अरामी होगा, नया नियम ग्रीक है। इसलिए, इसे उन भाषाओं से दुनिया में कहीं आज की भाषा में ले जाना। आमतौर पर, ये भाषाएँ फ्रेंच और जर्मन और स्पेनिश जैसी प्रमुख भाषाएँ नहीं होती हैं।

आमतौर पर, ये दुनिया भर में अल्पसंख्यक भाषाएँ हैं या ऐसी भाषाएँ हैं जिनमें बाइबल नहीं है। मध्य एशिया में ऐसी संस्कृतियाँ हैं जो ईसाई देश और ईसाई समूह नहीं हैं। उनमें ईसाई उपस्थिति नहीं है, और उनके पास बाइबल नहीं है, और उनकी संख्या लाखों में है।

तो, आप यह नहीं सोच सकते कि, ओह, बाइबल के बिना एक समूह शायद कुछ सौ लोगों या शायद कुछ हजार लोगों का होगा। नहीं, इनमें से कुछ भाषाएँ वास्तव में काफी बड़ी हैं। और इसलिए, हम उन भाषाई बाधाओं के पार शास्त्रों को संप्रेषित करने की इस प्रक्रिया के बारे में बात करने जा रहे हैं।

यहाँ डलास इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में अनुवाद एक विषय है। इसलिए, हमारे पास ऐसे छात्र हैं जो कहते हैं कि मैं अनुवाद अध्ययन में हूँ। मैं भाषा विज्ञान में हूँ।

मैं मानवशास्त्र में हूँ। और इसलिए, यह अध्ययन का एक क्षेत्र है। क्या अनुवाद एक विज्ञान है? तो, आप किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे हैं जिसने भाषा विज्ञान में प्रशिक्षण लिया है।

भाषाविज्ञान बहुत वैज्ञानिक है। यह वाम-मस्तिष्क है। यह विश्लेषणात्मक है।

यह भाषा को उसके सभी छोटे-छोटे हिस्सों को तोड़ने की कोशिश करने, भाषा के अंदरूनी और बाहरी पहलुओं को समझने और फिर अनुवाद की ओर बढ़ने के नजरिए से देखना है। हम ऐसा क्यों करते हैं? खैर, केन्या में जिस भाषा के साथ मैंने काम किया, उसमें कोई वर्णमाला नहीं थी। मेरा प्रशिक्षण इस बारे में था कि ध्वनियों को कैसे सुना जाए, उन्हें कैसे लिखा जाए, उन सभी ध्वनियों को कैसे समझा जाए और वर्णमाला कैसे बनाई जाए।

तो, विदेश जाने से पहले मैंने भाषा विज्ञान में प्रशिक्षण लिया था। बढ़िया। तो, आपके पास एक वर्णमाला है।

आपको और क्या जानने की ज़रूरत है? आपको भाषा के व्याकरण के बारे में जानने की ज़रूरत है। भले ही पहले से ही कोई वर्णमाला हो, फिर भी आपको भाषा का व्याकरण जानने की ज़रूरत है। आपको यह समझने में सक्षम होना चाहिए कि वाक्य और वाक्यांश कैसे एक साथ रखे जाते हैं।

जाहिर है, स्पैनिश में अगर आप कैसाब्लांका कहते हैं, तो कैसाब्लांका का मतलब है घर सफेद। लेकिन हम अंग्रेजी में घर सफेद नहीं कहते। हम कहते हैं सफेद घर।

और इसलिए, आप जानते हैं, ओह, स्पेनिश में, वे विशेषण और संज्ञा के क्रम को उलट देते हैं। किसी भाषा के व्याकरण को तोड़ना जानना यहाँ डलास इंटरनेशनल में हमारे प्रशिक्षण का हिस्सा है ताकि हम जाकर उन भाषाओं के साथ काम कर सकें जिनका या तो व्याकरण नहीं है, या जिनकी लिखित भाषा भी नहीं है, और किसी को इसे तैयार करने की ज़रूरत है ताकि फिर एक अच्छा अनुवाद तैयार किया जा सके। तो, यह एक हद तक बहुत विश्लेषणात्मक है।

इसलिए, कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, अनुवाद कोई विज्ञान नहीं है। अनुवाद एक कला है। तो, कौन सही है? क्या अनुवाद एक विज्ञान है, या अनुवाद एक कला है? और इसका उत्तर है हाँ।

यह एक कला और विज्ञान दोनों है। जब भी आप कोई लिखित दस्तावेज़ बनाते हैं, तो उसमें रचनात्मकता का तत्व होता है। जब भी आप कोई पाठ लिख रहे होते हैं, तो आप इसके बारे में नहीं सोचते। आप बस लिखते हैं।

लेकिन जब आप कुछ लिख रहे होते हैं, तो आपको यह सोचने में समय लगता है कि आप क्या कहना चाहते हैं, आप कौन से शब्द इस्तेमाल करना चाहते हैं और आप इसे किस तरह से कहना चाहते हैं। और इसलिए, बोलने का वह कार्य एक रचनात्मक कार्य है, कुछ ऐसा जो हम इंसानों में जन्मजात होता है। यह हमारे अंदर जन्मजात होता है।

भाषा और संचार की वह सहज प्रकृति रचनात्मकता का कार्य है। और इसलिए, यह एक विज्ञान है, अनुवाद भी एक कला है। और इसलिए, जब हम किसी दूसरी भाषा में धर्मग्रंथों का निर्माण करते हैं, तो हम उस भाषा के मूल वक्ताओं की रचनात्मकता पर निर्भर होते हैं, ताकि हम उस भाषा के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उसके साथ तालमेल बिठा सकें, ताकि हम एक ऐसा पाठ, एक बाइबल बना सकें, जो प्रभावी हो और अच्छी तरह से संप्रेषित हो।

ठीक है, और बाइबल अनुवाद? बाइबल अनुवाद एक मंत्रालय है। और मैं अपने छात्रों से कहता हूँ, आप भाषाविज्ञान पाठ्यक्रम ले रहे हैं। भाषाविज्ञान का अध्ययन करना आपके मंत्रालय का हिस्सा है। मेरा इससे क्या मतलब है? जब वे किसी दूसरी संस्कृति में जाते हैं जैसे मैंने अपनी पत्नी और हमारे बच्चों के साथ किया, और उस भाषा को तोड़-मरोड़ कर पेश किया, तो यह अनुवाद करने का अग्रदूत है।

और वह अनुवाद ही अंतिम लक्ष्य है, और वह एक मंत्रालय है। अब, इन लोगों के पास कोई शब्दकोश नहीं था। उनके पास भाषा का व्याकरण नहीं था।

उनके पास वर्णमाला भी नहीं थी। इसलिए, भले ही उनमें से कुछ गैर-ईसाई हों, उनके लिए यह प्रदान करना समुदाय के लिए एक मंत्रालय है। अब उनके पास अपनी भाषा लिखने का एक तरीका है।

अब उनके पास अपनी संस्कृति के लोगों से लिखित रूप में संवाद करने का एक तरीका है। और इसलिए, यह भाषा विज्ञान के उस पक्ष की संस्कृति के लिए एक मंत्रालय है, बस धर्मनिरपेक्ष पक्ष पर। लेकिन साथ ही, बाइबल अनुवाद में, हम स्थानीय चर्च की सेवा करने के लिए हैं, उनके लिए शास्त्र प्रदान करके उनकी सेवा करने के लिए, ताकि वे फिर अपनी समझ में आने वाली भाषा में परमेश्वर के वचन का संचार कर सकें ताकि लोग मसीह में बढ़ सकें ताकि वे सुसमाचार प्रचार कर सकें, ताकि वे शास्त्रों से शिक्षा दे सकें।

तो, बाइबल अनुवाद में हम जो करते हैं वह चर्च के लिए एक सेवकाई है। एक अर्थ में, बाइबल अनुवाद भी एक सेवा है। हम परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं।

हम सेवकाई कर रहे हैं, और सेवा का हर कार्य आराधना का कार्य माना जा सकता है। इसलिए, बाइबल अनुवाद में सेवकाई तब होती है जब हम परमेश्वर के पास जाते हैं; यह परमेश्वर के प्रति हमारी सेवा है।

यह हमारा ईश्वर की आराधना करने का तरीका है, इस मंत्रालय को करके। जब हमारे यहाँ हालात मुश्किल हो गए, तो मंत्रालय के पहलू को ध्यान में रखना मेरे और मेरी पत्नी के लिए बहुत ज़रूरी था। हम पूर्वी केन्या के एक रेगिस्तानी इलाके में रहते थे।

हम वास्तव में एक ऐसे समूह पर काम कर रहे थे जो अभी तक नहीं पहुँचा है। और हमारे सहकर्मियों ने भी कहा, आप इस समूह के साथ क्यों हैं? क्या वे बाइबल चाहते भी हैं जिसे आप बनाने की कोशिश कर रहे हैं? हम वहाँ परमेश्वर के लिए थे। हम इस मंत्रालय के लिए वहाँ थे।

हम इन लोगों की सेवा ऐसे तरीकों से करने के लिए वहाँ थे जिससे उन्हें बाद में लाभ हो। और हमने इस दृष्टिकोण को अपने विचारों में सबसे आगे रखा कि परमेश्वर हमसे क्या करवाना चाहता है ताकि जब समय कठिन हो, तो हम उसी पर भरोसा करें, परमेश्वर की संप्रभुता पर जिसके लिए उसने हमें उस मंत्रालय में बुलाया था। और इसलिए, यह न केवल हम कौन हैं, न केवल मिशनरियों के रूप में भूमिका बल्कि प्रभु के सेवक होने और वह करने की इच्छा से भी जुड़ा है जिसके लिए उसने हमें बुलाया है।

तो, इस संबंध में, बाइबल अनुवाद एक आध्यात्मिक प्रयास है। और मैं यहाँ बैठकर आपको कहानियाँ सुना सकता हूँ कि कैसे ईश्वर ने हमारी अनुवाद प्रक्रिया में प्रवेश किया और हमें सही समय पर सही वाक्यांश मिला। हम उनमें से कुछ पर बाद में चर्चा करेंगे।

लेकिन यह एक आध्यात्मिक प्रयास है, और किसी भी आध्यात्मिक प्रयास के लिए आध्यात्मिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। और प्रभु उन आध्यात्मिक संसाधनों का स्रोत है। पवित्र आत्मा हमें कई अलग-अलग तरीकों से मदद करने के लिए मौजूद है, जैसे कि शास्त्रों की व्याख्या करना और उन्हें समझना, उस भाषा को समझना जिसका हम अनुवाद करने की कोशिश कर रहे हैं, और फिर दो भाषाओं के बीच के अंतर को कैसे पाटना है।

तो, यह एक आध्यात्मिक प्रयास है। तो, मैं परमेश्वर द्वारा किए जा रहे इस आध्यात्मिक प्रयास को इस बात से समझाना चाहता हूँ कि मिसियो देई क्या है? परमेश्वर का मिशन क्या है? वह दुनिया में क्या कर रहा है? और परमेश्वर के पास यह दर्शन है कि वह दुनिया में क्या कर रहा है। और वह दर्शन तब शुरू हुआ जब उसने आदम और हव्वा को बनाया, और वह दर्शन तब भी जारी रहा जब आदम और हव्वा और उनके बच्चों ने बगीचे में उसके खिलाफ विद्रोह किया।

और तब से वह उस रिश्ते को बहाल करने के लिए काम कर रहा है। और इसलिए, उसका बड़ा सपना मानवता और खुद के बीच इस रिश्ते को बहाल करना है। लेकिन कुछ मायनों में, हम इंसानों के रूप में, भगवान के इस महान सपने को समझना वाकई मुश्किल है।

और इसलिए, परमेश्वर हमें उस दर्शन का एक हिस्सा देता है जिसे हम पकड़ सकते हैं, और जिससे हम जुड़ सकते हैं, और जिसे हम अपने मंत्रालय में जी सकते हैं। और इसलिए, हमारा

दर्शन सुसमाचार को पहुँचाना था, केन्या में इस भाषा में बाइबल को पहुँचाना था। इस तरह से इसकी शुरुआत हुई।

और इसलिए, यह परमेश्वर के महान दर्शन के भीतर हमारा दर्शन था। इसलिए, हम हमेशा दोनों के बीच इस परस्पर क्रिया को देखते हैं। और उसका दर्शन क्या है? उसका दर्शन लोगों को उसके साथ मेल-मिलाप करते हुए देखना है, और यही परमेश्वर का मिशन है।

तो, परमेश्वर का दर्शन उसके मिशन में सहायक होता है। यही वह देखता है। यही वह चाहता है।

फिर वह सभी राष्ट्रों में अपने सुसमाचार का प्रचार करके और उसे क्रियान्वित करके इसे मूर्त रूप देता है। लेकिन फिर से, यह एक बहुत बड़ी बात है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से लेकर अब्राहम तक, इस्राएलियों से लेकर आज के लोगों तक के लोगों के साथ काम करना शुरू किया।

यह हमारे लिए अवधारणा के लिए बहुत बड़ा है। लेकिन मेरा मिशन क्या है? वह कौन सा काम है जिसे करने के लिए भगवान ने मुझे बुलाया है, जो मेरे विजन से प्रेरित है? तो, वह काम हमारा मिशन है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति भगवान के उस मिशन का हिस्सा है जो उनके साथ जुड़ा हुआ है, और भगवान उन्हें वह काम करने के लिए बुलाते हैं जिसमें वे प्रतिभाशाली हैं, वह काम जिसमें वह उन्हें शामिल करना चाहते हैं।

और इसलिए, हम ईश्वर के दर्शन से जुड़े हैं, और हम ईश्वर के मिशन से जुड़े हैं। और अंतिम लक्ष्य ईश्वर का राज्य है। हम दुनिया भर में ईश्वर के राज्य का विस्तार करने का हिस्सा बनने के लिए मौजूद हैं।

और फिर, यह एक बहुत बड़ा, उदार लक्ष्य है जो परमेश्वर के पास परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने का है। लेकिन हम क्या कर सकते हैं? हम जहाँ हैं वहाँ परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने में मदद कर सकते हैं। हम केन्या में इस जन समूह के बीच परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने में मदद कर सकते हैं।

और अब, हम यहाँ छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए हैं ताकि वे बाहर जाकर परमेश्वर के राज्य का विस्तार करें, जहाँ परमेश्वर उन्हें दुनिया भर के इन अलग-अलग देशों में भेजता है। इफिसियों 2:10 कहता है, हम उसकी रचना हैं, मसीह यीशु में बनाए गए हैं, ताकि वह काम करें जिसे उसने पहले से तैयार किया था कि हम उनमें चलें। इसका क्या मतलब है? कि परमेश्वर ने हममें से हर एक को परमेश्वर के राज्य में, राज्य के काम में इस्तेमाल करने के लिए विशेष उपहार और विशेष योग्यताएँ दी हैं।

इसलिए, उन्होंने हमें जन्म से पहले ही इस तरह से तैयार कर दिया था। हम इन उपहारों के साथ पैदा हुए थे। मेरे पास ये उपहार भाषा के रूप में हैं।

मुझे भाषाएँ बहुत पसंद हैं। लेकिन उसने हम में से हर एक को ऐसी प्रतिभाएँ दी हैं कि हम उन प्रतिभाओं का इस्तेमाल दूसरे लोगों की सेवा में कर सकें। और यही वह काम है जिसके लिए उसने हमें बुलाया है।

और इसलिए, बाइबल अनुवाद वह मिशन है, वह दर्शन है, वह राज्य कार्य है, जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है। परमेश्वर हमें बाइबल अनुवादक के रूप में भी बुलाता है, ताकि हम चर्च की सेवा कर सकें और ताकि लोग मसीह को जान सकें और लोग परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में बढ़ सकें। धन्यवाद।

यह डॉ. जॉर्ज पेटन द्वारा बाइबल अनुवाद पर अपनी श्रृंखला में प्रस्तुत किया गया है। यह सत्र क्रमांक एक है, बाइबल अनुवाद का परिचय, भाग 1।